05 / 06 / 77 की अव्यक्त वाणी

पर आधारित योग अनुभूति

अलौकिक जीवन का कर्त्तव्य - विकारी को निर्विकारी बनाना

➢➢ वाह रे मैं ब्राह्मण आत्मा वाह

➳ _ ➳ वाह वाह के गीत गाती अपने सर्वश्रेष्ठ अलौकिक जीवन की स्मृति मे मग्न

➳ _ ➳ मुझ आत्मा को बाबा ने विश्व परिवर्तन के कार्य मे सहयोगी बनाया

→ अपने मीठे प्यारे बाबा को याद करती और बारम्बार शुक्रिया करती

→ अपने मनमीत अपने सच्चे साथी पर मन बुद्धि को एकाग्र करते

→ अनुभव करती हूं बापदादा मेरे सामने है लाइट माइट स्वरुप में

→ बापदादा की लाइट माइट मुझ पर पड रही है

→ मै अपने लाइट के फरिश्ता स्वरुप को देख रही हूं

→ बापदादा से निरंतर आती सर्वशक्तियों और गुणों से सम्पन्न बनती जा रही हूं

➳ _ ➳ मैं आत्मा लाइट माइट हूं

→ कमजोर संकल्प समाप्त हो गये है

→ संस्कारों को परिवर्तन करने की शक्ति आ गयी है

- संकल्प श्रेष्ठ और शक्तिशाली हो रहे है

➳ _ ➳ मैं आत्मा स्व का परिवर्तन कर विश्व परिवर्तन के कार्य मे बापदादा की सहयोगी बन रही हूं

→ ये मुझ आत्मा का मरजीवा जन्म है

- अलौकिक जन्म
- अलौकिक बाप मिला

→ इसलिए इस अलौकिक जन्म मे हर कर्म भी अलौकिक हो

→ बापदादा से कम्बाइंड रह अलौकिक जन्म के कर्तव्य को स्मृति मे रख

→ हर संकल्प, कर्म पर अटेंशन रखती हूं

→ सर्व आत्माओं के प्रति आत्मिक भाव रखती हूं

→ चमकती मणि को ही देखने का अभ्यास पक्का कर रही हूं

→ लौकिक मे रहते सब के प्रति अलौकिकता का भाव हो

→ इस अभ्यास को बढाती जा रही हूं

- सब बाबा के मीठे बच्चे है
- मेरे आत्मा भाई है

→ लौकिक घर भी बाबा का सेवा स्थान है

→ संकल्प, वाणी, कर्म लौकिक से अलौकिक हो रहे है

- ब्राह्मण जीवन ही अलौकिक है

➳ _ ➳ मैं आत्मा निमित्त हूं

➳ _ ➳ मैं आत्मा ट्रस्टी हूं

→ ये शरीर भी मेरा नही है

- सेवार्थ मिला है
- बाबा की अमानत है

→ निमित भाव रखने से लौकिक का आकर्षण व जिम्मेदारी खींचती नही है

→ लौकिक मे सेवा करते भी अलौकिकता का अनुभव करती हूं

- सब की स्वार्थ ही बाबा ने मुझ आत्मा को भेजा है

→ स्वयं को टस्ट्री समझने से डबल लाइट स्थिति का अनुभव कर रही हूं

→ सम्बंध सम्पर्क मे आते मस्तक पर चमकती मणि को देखने के अभ्यास को पक्का कर रही हूं

→ रुहानी सम्बंध रखते भाई बहन की रुहानी दृष्टि रखती हूं

→ मैं आत्मा कर्मेन्द्रियों की मालिक हूं

→ कर्मेन्द्रियजीत बनती जा रही हूं

- अलौकिकता का भाव रखने से हर परिस्थिति को सहज ही पार कर रही हूं

→ सर्व के प्रति शुभ भावना शुभ कामना रखती

→ विकारी को निर्विकारी बना रही हूं

→ ईर्ष्या, द्वेष, घृणा की भावना को खत्म कर

- खुशी
- सहयोग
- स्नेह

→ अलौकिक परिवार का अनुभव करा रही हूं

→ एक बाप दूसरा न कोई का अनुभव करा रही हूं

→ हर संकल्प, समय, सम्बन्ध और सम्पर्क मे अलौकिक जीवन का कर्तव्य निभा रही हूं